कंचना कुमारी
अतिथि । शिक्षक । हिन्दी
यू । आर । कॉलेज । रोसड़ा

आधुनिक काल में छायावाद के महत्व पर प्रकाश डालें।

मूर्त उपमानों प्राकृतिक तथा वैयक्तिक भावनाओं के माध्यम से अज्ञात सत्ता के प्रति जिज्ञासा भाव को अभिव्यक्ति छायावाद है इसका उदय द्विवेदी युग की स्थूल इतिवृत्तात्मकता तथा वर्णनात्मकता के विद्रोह स्वरुप हुआ। क्योंकि सूक्ष्म के प्रति स्थूल का विद्रोह और स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह दोनों की अति पर स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। जब द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मक स्थूल ~~काव्य~~ अभिव्यक्ति से साहित्यकार ऊबने लगे उस समय छायावाद का जन्म हुआ इसके मूल में भावुकता और कल्पना के प्रति सहज झुकाव है — अतिशय प्रेम है और प्रकृति के प्रति आकर्षणमय अतिरंजित अनुराग है। कवि जगत की कुण्ठाओं और संघर्षों से त्रस्त होकर संसार से भागना चाहता है। इस सम्बन्ध में नवलकिशोर गौड़ ने ठीक ही कहा है — "छायावाद के झंझावात से रीतिकालीन परम्पराएँ तो तिनकों की तरह उड़ ही गयीं, द्विवेदी काल की साहित्यक मान्यताएँ भी उसके प्रबल वेग को रोकने में असमर्थ रहीं। इस प्रकार राष्ट्रीय जागरण के उषाकाल से तीव्र विद्रोह की भावना लेकर छायावाद काव्य क्षेत्र मे अवतीर्ण हुआ।

छायावाद का आविर्भाव हिन्दी साहित्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। वह अभिव्यंजना-जगत में अपनी सानी नहीं रखता इसके चित्र यद्यपि कल्पित है फिर भी असाधारण है। इसमें प्रतीकों का ऐसा प्रचुर प्रयोग हुआ है कि इसकी भाषा को प्रतीक-प्रधान भाषा भी कहा जाता है। इसमें सूक्ष्म भावों की बड़ी कुशलता से अभिव्यक्ति हुई है। ब्रजभाषा की कमनीयता और माधुर्य, एवं खड़ी बोली का शुद्ध रूप दोनों का समन्वय छायावाद की विशेषता है।

Scanned with CamScanner